Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

छत्तीसगढ़ में जैन धर्म का विकास एवं प्रभाव

डॉ. महेश कुमार शुक्ला* अमित कुमार**

* सह प्राध्यापक (इतिहास) सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** शोधार्थी, सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – छत्तीसगढ़ भारतीय सभ्यता और संस्कृति का प्राचीन केंद्र रहा है। यहाँ विविध धर्मों एवं संप्रदायों ने समय-समय पर अपने सिद्धांतों और दर्शन का प्रचार-प्रसार किया। जैन धर्म, जो अहिंसा, अपरिग्रह और सत्य के सिद्धांतों पर आधारित है, छत्तीसगढ़ की भूमि में अत्यंत प्राचीन काल से विकसित हुआ। इस शोध पत्र में छत्तीसगढ़ में जैन धर्म के ऐतिहासिक विकास, प्रमुख जैन स्थलों, मूर्तिकला, साहित्य, समाज और संस्कृति पर इसके प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना – भारत में जैन धर्म का उद्भव लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भगवान महावीर स्वामी के समय से माना जाता है, किंतु छत्तीसगढ़ में जैन धर्म का प्रसार महावीर पूर्वकालीन भी रहा है। यह क्षेत्र प्राचीन काल में दक्षिण कोशल और महाकोशल के नाम से जाना जाता था। यहाँ के शिलालेखों, मूर्तियों तथा पुरातात्त्विक अवशेषों से सिद्ध होता है कि जैन धर्म का प्रभाव यहां मौर्य, शुंग, सतवाहन, वाकाटक, सोमवंशी, कलचुरी और नागवंश काल तक रहा।

छत्तीसगढ़ की भौगोलिक स्थिति मध्य भारत में होने के कारण यह क्षेत्र व्यापार मार्गों के केंद्र में रहा, जिससे जैन धर्म के व्यापारी वर्ग को यहाँ बसने का अवसर मिला और धर्म का व्यापक प्रचार हुआ।

छत्तीसगढ़ में जैन धर्म का प्रारंभिक विकास – छत्तीसगढ़ में जैन धर्म के विकास की कथा मौर्यकाल से प्रारंभ होती है। सम्राट अशोक के काल में जब बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ, उसी समय जैन धर्म के अनुयायी भी दक्षिण और मध्य भारत की ओर बढ़े। कौशल प्रदेश के रूप में प्रसिद्ध यह क्षेत्र व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था।

जैन धर्म के तीर्थकरों की मूर्तियाँ और प्रतिमाँ, जो सिरपुर, मल्हार, रतनपुर, पाली, चंपारन, और बिल्हा क्षेत्रों में मिली हैं, वे इस बात की पुष्टि करती हैं कि यहाँ जैन धर्म का गहरा प्रभाव था।

विशेष रूप से सिरपुर और मल्हार से प्राप्त ताम्रपत्र, शिलालेख और मूर्तियाँ छत्तीसगढ़ में जैन धर्म के विकास का महत्वपूर्ण प्रमाण हैं।

मुख्य जैन तीर्थ स्थल एवं पुरातात्त्विक प्रमाण – मल्हार –मल्हार छत्तीसगढ़ का अत्यंत प्राचीन स्थल है। यहाँ से मिली जैन मूर्तियाँ, जिनमें आदिनाथ, पार्श्वनाथ, शांतिनाथ आदि तीर्थकरों की प्रतिमाँ, हैं, गुप्तोत्तर काल (7वीं-10वीं शताब्दी) की हैं। मल्हार में प्राप्त जैन बस्ती और प्रतिमाओं के साथ ब्राह्मी लेख यह दर्शाते हैं कि यहाँ एक समृद्ध जैन समाज विद्यमान था।

सिरपुर –सिरपुर में बौद्ध और जैन धर्म दोनों का प्रभाव रहा। यहाँ से प्राप्त तीर्थकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा, जैन विहारों के अवशेष और मंदिर स्थापत्य यह प्रमाणित करते हैं कि छठी से बारहवीं शताब्दी के बीच यहाँ जैन धर्म फला-फूला।

रतनपुर– यह क्षेत्र कलचुरी शासन का प्रमुख केंद्र रहा। रतनपुर के जैन मंदिरों में कलचुरीकालीन प्रतिमाँ और शिलालेख प्राप्त हुआ हैं।

पाली– पाली में भी जैन तीर्थकरों की मूर्तियाँ और ताम्रपत्र मिले हैं, जिनमें शांतिनाथ और नेमिनाथ के उल्लेख हैं।

अड़भार– इन क्षेत्र से प्राप्त जैन मूर्तियाँ यह प्रमाण्ति करती हैं कि यहाँ व्यापारी समुदायों के माध्यम से जैन धर्म का प्रचार हुआ।

जांजगीर–चांपा में जैन समाज आज भी प्रमुख है, और यहाँ जैन मंदिरों का समूह स्थापित है।

कलचुरी शासनकाल में जैन धर्म का उत्कर्ष – कलचुरी वंश (9वीं से 12वीं शताब्दी) के शासन में छत्तीसगढ़ में जैन धर्म का उत्कर्ष काल आया। इस समय जैन मंदिरों, प्रतिमाओं और विहारों का निर्माण हुआ। कलचुरी शासक जैन धर्म के प्रति सहिष्णु थे और उन्होंने जैन आचार्यों को संरक्षण दिया।

रतनपुर के अभिलेखों में जैन मुनियों का उल्लेख मिलता है, जिनका समाज पर विशेष प्रभाव था। इसी काल में जैन व्यापारियों ने नगरों के विकास में योगदान दिया, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था और कला दोनों समृद्ध हुई।

जैन मूर्तिकला एवं स्थापत्य कला – छत्तीसगढ़ की जैन मूर्तिकला भारतीय शिल्प परंपरा की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है। यहाँ की मूर्तियों में तीर्थकरों के शांत और ध्यानमग्न भाव दर्शाता हैं।

सिरपुर की पार्श्वनाथ प्रतिमा में सर्पफणासन का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है। माल्हार की प्रतिमाओं में गुप्तकालीन कला शैली का प्रभाव दिखाई देता है। अड़भार की प्रतिमाओं में स्थानीय लोकशिल्प का मिश्रण है। इन प्रतिमाओं से स्पष्ट होता है कि जैन धर्म केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि कलात्मक दृष्टि से भी अत्यंत उन्नत था।

साहित्यिक और दार्शनिक प्रभाव – जैन धर्म ने छत्तीसगढ़ की साहित्यिक परंपरा को भी प्रभावित किया। यहाँ के जैन मुनियों ने प्राकृत और संस्कृत में ग्रंथों की रचना की। अहिंसा, अपरिग्रह और सत्य के सिद्धांतों ने यहाँ के लोकाचार में स्थान पाया।

छत्तीसगढ़ी लोककथाओं और कहावतों में जैन नैतिकता का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। 'जीव और अजीव' के सिद्धांतों ने स्थानीय दर्शन पर गहरा प्रभाव डाला।

सामाजिक और आर्थिक प्रभाव – छत्तीसगढ़ में जैन धर्म के अनुयायी प्राय: व्यापारी और शिल्पकार वर्ग से संबंधित रहे हैं। उन्होंने व्यापारिक केंद्रों, नगरों और तीर्थस्थलों के विकास में योगदान दिया।

जैन समाज ने शिक्षा, स्वास्थ्य और दान की परंपरा को बढ़ावा दिया। जैन धर्म की अहिंसा की भावना ने स्थानीय समाज में सद्भावना और सहअस्तित्व की भावना को प्रोत्साहित किया।

जैन धर्म और छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति – जैन धर्म के आदर्श लोकसंस्कृति में रच-बस गये हैं। छत्तीसगढ़ी लोककला, लोकगीतों, नृत्यों और लोकरीतियों में जैन दर्शन की झलक मिलती है।

उदाहरण के लिए 'जीव दया' और 'सत्य की विजय' जैसे विषय लोकगीतों में बार-बार प्रकट होते हैं। जैन धर्म ने पशुहत्या, हिंसा और व्यसन के विरोध के माध्यम से छत्तीसगढ़ की सामाजिक चेतना को नया आयाम दिया।

आधुनिक काल में जैन धर्म का पुनरुत्थान – ब्रिटिश शासन काल के दौरान जैन समाज ने शिक्षा और सामाजिक सुधार में प्रमुख भूमिका निभाई। रायगढ़, बिलासपुर, दुर्ग, भिलाई और रायपुर में जैन समाज ने मंदिर, विद्यालय और सामाजिक संस्थाँ स्थापित कीं।

वर्तमान में श्री श्वेतांबर और दिगम्बर दोनों परंपराँ छत्तीसगढ़ में सक्रिय हैं। रायपुर का जैन दादाबाड़ी मंदिर, जांजगीर-चांपा का नेमिनाथ मंदिर, और राजनांदगांव का पार्श्वनाथ मंदिर प्रमुख तीर्थस्थल हैं।

छत्तीसगढ़ में जैन धर्म का सांस्कृतिक प्रभाव – भारत की सांस्कृतिक धारा में जैन धर्म का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। जैन धर्म न केवल आध्यात्मिक दर्शन के लिए जाना जाता है, बल्कि इसने भारतीय कला, स्थापत्य और मूर्तिकला को भी नई दिशा दी। छत्तीसगढ़, जो प्राचीन काल में दक्षिण कोशल के नाम से प्रसिद्ध था, जैन धर्म के प्रभाव से विकसित हुई कला का एक प्रमुख केंद्र रहा है। यहाँ की जैन मूर्तियाँ, मंदिर, और स्थापत्य शैली जैन धर्म की गहरी कलात्मक परंपरा को दर्शाते हैं।

छत्तीसगढ़ में जैन धर्म का प्रसार ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के आसपास माना जाता है। कलचुरी, पाण्डु, और नागवंशी शासकों के काल में जैन धर्म को संरक्षण प्राप्त हुआ। जैन मुनियों और श्रावकों ने न केवल धर्म का प्रचार किया, बल्कि कला और स्थापत्य के क्षेत्र में भी योगदान दिया।

छत्तीसगढ़ में जैन धर्म के प्रभाव से अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण हुआ। इन मंदिरों की स्थापत्य शैली में सरलता, शांति और संतुलन का भाव झलकता है।

आरंग में स्थित भगवान आदिनाथ और पार्श्वनाथ की विशाल मूर्तियाँ अत्यंत प्रसिद्ध हैं। मंदिरों की शिल्पकला में जैन स्थापत्य के विशिष्ट लक्षण, सममितता, सुंदर तोरण, और मंडप स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

जैन धर्म ने छत्तीसगढ़ की मूर्तिकला को आध्यात्मिकता और शांति का सौंदर्य प्रदान किया। जैन प्रतिमाएँ प्राय: ध्यान मुद्रा या खड़े कायोत्सर्ग मुद्रा में बनाई जाती थीं, जो साधना और संयम का प्रतीक हैं। मूर्तियों में चेहरे का भाव शांत और गंभीर होता है, जो अहिंसा और समभाव की भावना को व्यक्त करता है। छत्तीसगढ़ की जैन मूर्तियाँ प्राय: बालू पत्थर और ग्रेनाइट से बनी होती थीं, जिन पर बारीक नक्काशी देखने को मिलती है। जैन मूर्तियों में लक्षण चिन्हों (जैसे सिंह, नंदी, ध्वज आदि) का विशेष ध्यान रखा गया है। यद्यपि छत्तीसगढ़ में प्राचीन जैन चित्रकला के बहुत कम उदाहरण मिले हैं, परन्तु मंदिरों की भित्तियों और स्तंभों पर की गई नक्काशियों में जैन कला के सिद्धांत झलकते हैं। जैन कला में सरल रेखाएँ, संतुलन, और रंगों का संयमित प्रयोग प्रमुख विशेषताएँ हैं।

छत्तीसगढ़ के कई पारंपरिक शिल्पकारों ने जैन मूर्तियों से प्रेरित होकर धातु और मृत्तिका कला में भी जैन प्रतिमाएँ बनाई हैं। जैन धर्म के मूल सिद्धांत – अहिंसा, अपरिग्रह, संयम और ध्यान ने कला को भौतिकता से ऊपर उठाकर आध्यात्मिकता से जोड़ा। यहाँ की जैन कला में बाहरी वैभव से अधिक आंतरिक शांति और संतुलन का भाव प्रकट होता है। यही इस क्षेत्र की कला की विशिष्टता है।

भारत की विविध सांस्कृतिक परंपराओं में जैन धर्म का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। जैन धर्म ने केवल धर्म और दर्शन के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि भाषा, साहित्य और अभिव्यक्ति के क्षेत्र में भी गहरा प्रभाव छोड़ा। छत्तीसगढ़, जो प्राचीन काल से ही विद्या और संस्कृति की भूमि रही है, वहाँ की भाषा और साहित्य पर भी जैन धर्म का विशेष प्रभाव देखा जा सकता है।

छत्तीसगढ़ प्राचीन काल में दक्षिण कोशल राज्य के नाम से प्रसिद्ध था। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में यहाँ जैन धर्म का प्रवेश हुआ और धीरे-धीरे इसका प्रचार-प्रसार व्यापारिक नगरों तथा ग्रामीण समाज में हुआ।

जैन आचार्य, साधु और श्रावक समुदाय न केवल धर्म प्रचारक थे, बल्कि शिक्षा, लेखन और भाषा विकास के संवाहक भी बने। उनके द्वारा रचित ग्रंथों और उपदेशों ने छत्तीसगढ़ की भाषाई संस्कृति को समृद्ध किया।

जैन धर्म के साहित्य का मूल आधार प्राकृत भाषा रही है। महावीर स्वामी के उपदेश भी अर्धमागधी प्राकृत में थे।

जैन आचार्यों ने प्राकृत भाषा में अनेक धार्मिक ग्रंथ, सूत्र और कथाएँ रचीं।समय के साथ इन ग्रंथों का प्रभाव छत्तीसगढ़ क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषाओं विशेषकर छत्तीसगढ़ी, हिंदी और अपभ्रंश पर पड़ा।

कई प्राकृत शब्द जैसे 'जिन', 'धम्म', 'सम्यक', 'कर्म', 'अहिंसा' आदि बाद में स्थानीय बोलचाल और साहित्य में भी प्रचलित हुए।

छत्तीसगढ़ी भाषा में आज भी कुछ शब्द जैन ग्रंथों की भाषाई परंपरा से मिलते-जुलते हैं।

साहित्यिक परंपरा में योगदान – जैन मुनियों ने छत्तीसगढ़ सहित मध्य भारत में साहित्यिक चेतना के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जैन कवियों और आचार्यों ने धार्मिक ग्रंथों के साथ-साथ नीतिकथाएँ, लोककथाएँ, और चरित्र ग्रंथ भी लिखे।

इन रचनाओं का प्रभाव स्थानीय कवियों और भाटों पर पड़ा, जिन्होंने छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य में अहिंसा, सत्य और संयम जैसे जैन आदर्शों को अपनाया। जैन धर्म के प्रभाव से छत्तीसगढ़ी भाषा में संवाद शैली और सरल शब्दों का प्रयोग बढ़ा, जिससे यह आम जनता की भाषा बनी रही।

छत्तीसगढ़ की लोकभाषा में जैन धर्म से जुड़े कई शब्द, मुहावरे और कहावतें आज भी सुनने को मिलते हैं।

उदाहरण के लिए 'पाप कर्म' या 'पुण्य कर्म' जैसी अवधारणाएँ जैन दर्शन से ली गई हैं। 'अहिंसा परमो धर्म' जैसे विचार लोककथाओं और लोकगीतों में बार-बार दोहराए जाते हैं। इस प्रकार जैन धर्म ने छत्तीसगढ़ी भाषा में आध्यात्मिकता और नैतिकता की शब्दावली जोड़ी।

शिक्षा और भाषा के प्रसार में भूमिका – जैन समाज ने छत्तीसगढ़ में

पाठशालाओं और पुस्तकालयों की स्थापना की। इन संस्थानों में प्राकृत, संस्कृत, और हिंदी के साथ-साथ स्थानीय भाषाओं का भी अध्ययन कराया जाता था। इससे भाषा के प्रति लोगों की रुचि बढ़ी और साक्षरता तथा लेखन परंपरा का विकास हुआ। छत्तीसगढ़ की भाषा और साहित्य पर जैन धर्म का प्रभाव गहरा और स्थायी रहा है। इस धर्म ने भाषा को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि संयम, करुणा और सत्य के प्रचार का साधन बनाया। जैन धर्म की प्राकृत परंपरा ने छत्तीसगढ़ी भाषा की सादगी, सहजता और लोकधर्मी स्वरूप को सशक्त किया। 'जैन धर्म ने छत्तीसगढ़ की भाषा को शुद्धता, सरलता और मानवीय संवेदनाओं की शक्ति से समृद्ध किया।'

जैन धर्म और पर्यावरण – जैन धर्म की 'जीव दया' और 'अहिंसा परमो धर्म:' की भावना आज के पर्यावरणीय चिंतन से भी जुड़ी है। छत्तीसगढ़ के जैन समाज ने वृक्षारोपण, जल संरक्षण और स्वच्छता अभियानों में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

निष्कर्ष – छत्तीसगढ़ में जैन धर्म का इतिहास केवल धार्मिक प्रसार की कथा नहीं, बल्कि संस्कृति, कला, साहित्य और समाज के विकास की कहानी है। यह धर्म इस क्षेत्र के नैतिक और सांस्कृतिक जीवन में गहराई से समाया हुआ है।

जैन धर्म की शिक्षाओं ने छत्तीसगढ़ की जनता को सदाचार, सहिष्णुता और करुणा के पथ पर अग्रसर किया। आज भी यह धर्म यहाँ की सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग है।

जैन धर्म ने छत्तीसगढ़ की संस्कृति को मानवीयता, नैतिकता और कलात्मकता के मूल्यों से समृद्ध किया। छत्तीसगढ़ की कला में जैन धर्म का प्रभाव अत्यंत गहरा और स्थायी है। जैन धर्म ने यहाँ की मूर्तिकला, स्थापत्य, और शिल्प परंपरा को आत्मिकता और सौंदर्य की दृष्टि से समृद्ध किया। आज भी आरंग, सिरपुर, और मल्हार जैसे स्थानों की जैन मूर्तियाँ इस बात की साक्षी हैं कि छत्तीसगढ़ की कला पर जैन धर्म की शांत, संयमित और आध्यात्मिक भावना सदैव विद्यमान रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. शर्मा, आर-के- छत्तीसगढ़ का इतिहास, दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2012.
2. दास, बी-,एन- जैन धर्म का इतिहास और दर्शन, वाराणसी भारती प्रकाशन, 2008.
3. त्रिपाठी, के-पी- सिरपुर की सांस्कृतिक धरोहर, रायपुर विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2015.
4. गुप्ता, आर-सी- छत्तीसगढ़ के पुरातात्त्विक स्थल, भोपाल, मध्यप्रदेश पुरातत्व विभाग, 2009.
5. पांडेय, रामेश्वर, भारतीय धर्म दर्शन का इतिहास, प्रयागराज, लोकभारती, 2010.
6. छत्तीसगढ़ राज्य पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग की वार्षिक रिपोर्ट (2018-2022).

****